विशेष : शिवपूजन सहाय

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपए

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 366 मई–2026

युद्ध और साहित्य

विजय कुमार वैभव सिंह
मृत्युंजय श्रीवास्तव
बजरंग बिहारी तिवारी
गीताश्री
प्रस्तुति : जीतेश्वरी

कहानियाँ

हंसा दीप उन्मेष कुमार सिन्हा
वंदना शुक्ल गौरव रघुवंशी
जीलानी बानो (उर्दू)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 366, मई 2026

इस अंक में

भारतीय ज्ञान : टकराव और संवाद : **संपादकीय** 5

कहानियां

शोक उत्सव : **हंसा दीप** 12

कमाई : **उन्मेष कुमार सिन्हा** 19

धुसपैठिए : **वंदना शुक्ल** 29

सीटी सिग्नल और नियति : **गौरव रघुवंशी** 34

खाली सुराही (उर्दू कहानी) : **जीलानी बानो**
(अनुवाद : **शमीम उद्दीन अंसारी**) 40

कविताएं

एकांत श्रीवास्तव/अदनान कफील दरवेश/स्मिता सिन्हा/ ज्योतिकृष्ण वर्मा/विनय सौरभ/कविता विकास/गरिमा सिंह/ शिवांगी गोयल/रचना श्रीवास्तव/मिथिलेश 'आदित्य'

नेपाली कविताएं : **वसंत थापा** (अनुवाद : **अर्चना विश्वकर्मा**)

भारतीय अंग्रेजी कविताएं : **तिशानी दोशी**
(अनुवाद : **बालमुकुंद नंदवाना**) 46

परिचर्चा

युद्ध और साहित्य : **विजय कुमार/वैभव सिंह/ मृत्युंजय श्रीवास्तव/बजरंग बिहारी तिवारी/गीताश्री**
(प्रस्तुति : **जीतेश्वरी**) 66

स्मरण

देहाती दुनिया : दरोगा जी का चोर महल
: **शिवपूजन सहाय** 92

संस्मरण

मेरे पिता : मेरे बंधु : **कुणाल सेन**
(अनुवाद : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**) 95

विश्वदृष्टि

बाढ़ की लपटें (घाना की कविताएं) : **अबोसे अल्लोते**
(अनुवाद : **अनुपमा ऋतु**) 100

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

समीक्षा संवाद

जीवन का सौंदर्य तलाशती कविताएं : **संजय जायसवाल**
(नरेश सक्सेना, सदानंद शाही और अनुराधा ओस की पुस्तकें) 102

सोशल मीडिया 112

विविध

पाठक संसद/किताबें 115

लघुकथा

बिना स्क्रीन की शाम : **महेंद्र मद्धेशिया** 39

बतरस

यादों में शमशेर : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

के सच्चिदानंदन/ मारियो बेनेडेटी (उरेग्वेयन)

मल्टी मीडिया

कृष्णा सोबती : एक मुलाकात

कविताओं में रेखांकन :
नेट से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।
● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार : **मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य : **अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

भारतीय ज्ञान : टकराव और संवाद

भारतीय ज्ञान परंपरा की खोज अतीत को दोहराना नहीं है बल्कि अपने वर्तमान को गहराई और भविष्य को दिशा देना है। यह अपनी जड़ों को टटोलना है, जड़ हो जाना नहीं है। इन दिनों बौद्धिक जगत तथा शिक्षा में भारतीय ज्ञान को चर्चा के केंद्र में ला दिया गया है। इसके जो उद्देश्य हों, कई बार अपनी परंपराओं के बारे में सोचना जीवन की अनिवार्यता होती है क्योंकि उनका संबंध हमारी पहचान से ही नहीं हमारे आत्मबोध से भी है।

समस्या यह है कि ज्ञान की खोज जब सत्ता के पूर्वग्रहों से आक्रांत हो जाती है वह जिज्ञासा और सत्य की तलाश न होकर मनमाफिक चयन बन जाती है। यह तब किसी विशेष सत्य को स्थापित करने, कृत्रिम नैरेटिव बनाने और नियंत्रण के औजार में बदल जाती है। इसलिए हर युग में चुनौती है कि कैसे ज्ञान को सत्ता के पूर्वग्रहों से बचाया जाए ताकि परंपराओं की तलाश में जिज्ञासा और उन परंपराओं के अर्थ को खोलने की स्वतंत्रता बनी रहे।

'महान परंपरा–लघु परंपरा' के एकायामी विभाजन की ही तरह हमारे देश में गांधी–आंबेडकर, प्रेमचंद–प्रसाद, अज्ञेय–मुक्तिबोध या आर्य–द्रविड़, राष्ट्र–सबाल्टर्न, हम–वे, बाहरी–भीतरी जैसे कई बाइनरी लगातार गढ़े जाते रहे हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उनकी 'आत्मीय विशिष्टताओं' को समझना नहीं कृत्रिम विभाजन पैदा करना रहा है। ऐसी दृष्टि जिस चिंतन में उपलब्धियां देखती है उसकी सीमाएं नहीं देखती और जिसमें सीमाएं देखती है उसमें उपलब्धियां नहीं देख पाती। यह बौद्धिक एकतरफापन है जो आम मामला बन गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की इन दिनों बनाई जा रही वर्चस्वपरक एकरेखीय धारणा पुरानी औपनिवेशिक बौद्धिकता का ही नया संस्करण है। यहां पूर्वग्रहों का एक दूसरा अंधकार रचा जाता है। कहा जाता है कि भारतीय